

व्याख्यात्मक अनुसंधान में परिकल्पना की भूमिका

1. प्रस्तावना (Introduction)

सामाजिक कार्य अनुसंधान में व्याख्यात्मक अनुसंधान का विशेष महत्त्व है। इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक घटनाओं, समस्याओं तथा मानवीय व्यवहार के पीछे विद्यमान कारणों और उनके बीच संबंधों को समझना है। व्याख्यात्मक अनुसंधान के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि कोई सामाजिक घटना क्यों घटित होती है तथा उसके लिए कौन-कौन से कारक उत्तरदायी हो सकते हैं।

इस प्रकार के अनुसंधान में परिकल्पना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह अनुसंधानकर्ता को संभावित कारणों और चरों के बीच संबंधों की जाँच करने के लिए दिशा प्रदान करती है।

2. व्याख्यात्मक अनुसंधान का अर्थ (Meaning of Explanatory Research)

व्याख्यात्मक अनुसंधान वह अनुसंधान है, जिसके माध्यम से किसी सामाजिक घटना या समस्या के कारणों, परिणामों तथा विभिन्न चरों के बीच संबंधों को समझने का प्रयास किया जाता है।

उदाहरण: किसी क्षेत्र में बाल अपराध बढ़ने के कारणों का अध्ययन करना तथा यह जानना कि पारिवारिक वातावरण, आर्थिक स्थिति और सामाजिक परिस्थितियाँ बाल अपराध से किस प्रकार संबंधित हैं।

व्याख्यात्मक अनुसंधान केवल यह नहीं बताता कि कोई घटना क्या है, बल्कि यह समझने का प्रयास भी करता है कि वह क्यों और किन परिस्थितियों में घटित होती है।

3. परिकल्पना का अर्थ (Meaning of Hypothesis)

परिकल्पना किसी अनुसंधान समस्या के संभावित उत्तर अथवा दो या दो से अधिक चरों के बीच संबंध के संबंध में प्रस्तुत किया गया एक अस्थायी, स्पष्ट और परीक्षण योग्य कथन है।

सरल शब्दों में, परिकल्पना वह अनुमान है, जिसकी सत्यता की जाँच अनुसंधान के माध्यम से की जाती है।

उदाहरण: बेरोजगारी और युवाओं में मानसिक तनाव के बीच सकारात्मक संबंध है।

इस परिकल्पना की जाँच करने के लिए अनुसंधानकर्ता बेरोजगारी की स्थिति तथा मानसिक तनाव से संबंधित आँकड़े एकत्रित करके उनका विश्लेषण कर सकता है।

4. व्याख्यात्मक अनुसंधान में परिकल्पना की भूमिका

व्याख्यात्मक अनुसंधान में परिकल्पना की प्रमुख भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं—

1. अनुसंधान को दिशा प्रदान करना

परिकल्पना अनुसंधानकर्ता को अध्ययन की दिशा निर्धारित करने में सहायता करती है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि किस सामाजिक घटना का अध्ययन करना है तथा किन कारकों पर विशेष ध्यान देना है।

उदाहरण: यदि अनुसंधान का विषय बेरोजगारी और युवाओं में तनाव है, तो परिकल्पना अनुसंधानकर्ता को इन दोनों चरों के बीच संबंध का अध्ययन करने की दिशा प्रदान करती है।

2. कारण और परिणाम के संबंध को समझना

व्याख्यात्मक अनुसंधान में परिकल्पना की प्रमुख भूमिका संभावित कारणों और परिणामों के बीच संबंधों की जाँच करना है।

उदाहरण के लिए, अनुसंधानकर्ता यह जाँच कर सकता है कि क्या आर्थिक असुरक्षा परिवारों में तनाव से संबंधित है।

हालाँकि, केवल दो चरों के बीच संबंध मिलने से यह सिद्ध नहीं होता कि एक चर दूसरे का कारण है। कारणात्मक निष्कर्ष के लिए उपयुक्त अनुसंधान डिजाइन और पर्याप्त प्रमाण आवश्यक हैं।

3. चरों के बीच संबंधों की पहचान करना

परिकल्पना स्वतंत्र चर और आश्रित चर के बीच संभावित संबंध को स्पष्ट करती है।

स्वतंत्र चर: वह चर जिसके संभावित प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

आश्रित चर: वह चर जिसमें होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है।

उदाहरण: महिलाओं के कौशल प्रशिक्षण और उनके रोजगार के अवसरों के बीच संबंध का अध्ययन करना।

इस उदाहरण में कौशल प्रशिक्षण को स्वतंत्र चर तथा रोजगार के अवसरों को आश्रित चर के रूप में लिया जा सकता है।

4. तथ्यों के संकलन में सहायता करना

परिकल्पना अनुसंधानकर्ता को यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि कौन-से तथ्य एकत्रित किए जाने चाहिए।

इसके आधार पर अनुसंधानकर्ता प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन और अन्य उपयुक्त विधियों का चयन कर सकता है।

इससे अनावश्यक जानकारी एकत्रित करने से बचा जा सकता है तथा अनुसंधान अधिक व्यवस्थित बनता है।

5. अनुसंधान समस्या को सीमित करना

सामाजिक समस्याएँ प्रायः व्यापक और जटिल होती हैं। परिकल्पना अनुसंधान समस्या को एक निश्चित सीमा में केंद्रित करने में सहायता करती है।

उदाहरण के लिए, महिला सशक्तीकरण के सभी पहलुओं का अध्ययन करने के बजाय अनुसंधानकर्ता महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता के बीच संबंध का अध्ययन कर सकता है।

इससे अध्ययन को अधिक स्पष्ट और व्यावहारिक बनाया जा सकता है।

6. सिद्धांतों की जाँच में सहायता करना

व्याख्यात्मक अनुसंधान में परिकल्पना का निर्माण पूर्ववर्ती सिद्धांतों, उपलब्ध तथ्यों और पूर्व अध्ययनों के आधार पर किया जा सकता है।

अनुसंधानकर्ता परिकल्पना का परीक्षण करके यह जाँचता है कि प्राप्त प्रमाण संबंधित सिद्धांत के अनुरूप हैं या नहीं।

इस प्रक्रिया से सामाजिक सिद्धांतों की पुष्टि, संशोधन अथवा उनके पुनर्मूल्यांकन में सहायता मिलती है।

7. आँकड़ों के विश्लेषण में सहायता करना

परिकल्पना अनुसंधानकर्ता को एकत्रित आँकड़ों का व्यवस्थित विश्लेषण करने में सहायता करती है।

अनुसंधान के उद्देश्य और परिकल्पना के प्रकार के अनुसार गुणात्मक या मात्रात्मक विश्लेषण विधियों का उपयोग किया जा सकता है।

इससे चरों के बीच संबंधों तथा सामाजिक घटनाओं से संबंधित प्रतिरूपों को समझने में सहायता मिलती है।

8. निष्कर्ष निकालने में सहायता करना

अनुसंधान के अंत में प्राप्त प्रमाणों का परिकल्पना के संदर्भ में मूल्यांकन किया जाता है।

यदि आँकड़े परिकल्पना के अनुरूप हैं, तो वे उसका समर्थन कर सकते हैं। यदि प्रमाण उसके अनुरूप नहीं हैं, तो परिकल्पना को अस्वीकार करने या संशोधित करने की आवश्यकता हो सकती है।

इस प्रकार परिकल्पना निष्कर्षों को तार्किक और प्रमाण-आधारित बनाने में सहायता करती है।

9. सामाजिक समस्याओं के समाधान में योगदान देना

व्याख्यात्मक अनुसंधान के माध्यम से सामाजिक समस्याओं से संबंधित संभावित कारणों और कारकों को समझा जा सकता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी अध्ययन में विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति का आर्थिक कठिनाइयों से संबंध पाया जाता है, तो इस जानकारी के आधार पर छात्रवृत्ति, आर्थिक सहायता और अन्य शैक्षिक हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर विचार किया जा सकता है।

इस प्रकार परिकल्पना सामाजिक कार्यकर्ताओं को समस्या की प्रकृति समझने और संभावित समाधान विकसित करने में अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करती है।

10. समय और संसाधनों का उचित उपयोग

परिकल्पना अनुसंधान को केंद्रित और व्यवस्थित बनाती है। इससे अनुसंधानकर्ता आवश्यक तथ्यों के संकलन, उपयुक्त विधियों के चयन और विश्लेषण की योजना पहले से तैयार कर सकता है।

परिणामस्वरूप समय, श्रम और आर्थिक संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग संभव होता है।

5. व्याख्यात्मक अनुसंधान में परिकल्पना का उदाहरण

अनुसंधान विषय: ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण पर कौशल प्रशिक्षण का प्रभाव।

परिकल्पना: कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली ग्रामीण महिलाओं के रोजगार के अवसर, प्रशिक्षण प्राप्त नहीं करने वाली महिलाओं की तुलना में अधिक होते हैं।

इस परिकल्पना की जाँच के लिए अनुसंधानकर्ता दो समूहों की महिलाओं से संबंधित जानकारी एकत्रित कर सकता है। इसमें उनकी शैक्षिक स्थिति, कौशल प्रशिक्षण, रोजगार, आय और पारिवारिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जा सकता है।

इसके बाद प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करके दोनों समूहों के बीच अंतर और संभावित संबंधों का मूल्यांकन किया जा सकता है।

इस प्रकार परिकल्पना अनुसंधानकर्ता को संभावित संबंध की जाँच करने तथा निष्कर्षों के आधार पर व्याख्या प्रस्तुत करने में

सहायता करती है।

6. व्याख्यात्मक अनुसंधान में परिकल्पना की सीमाएँ

परिकल्पना महत्वपूर्ण होने के बावजूद इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं—

1. गलत या अस्पष्ट परिकल्पना अनुसंधान को गलत दिशा दे सकती है।
2. सामाजिक घटनाएँ अनेक कारकों से प्रभावित होती हैं, इसलिए सभी घटनाओं की व्याख्या एक ही परिकल्पना से नहीं की जा सकती।
3. पूर्वाग्रहपूर्ण परिकल्पना तथ्यों की निष्पक्ष व्याख्या को प्रभावित कर सकती है।
4. प्रत्येक व्याख्यात्मक अनुसंधान में औपचारिक परिकल्पना बनाना आवश्यक नहीं होता; कुछ अध्ययन अनुसंधान प्रश्नों के आधार पर भी किए जाते हैं।
5. परिकल्पना का समर्थन करने वाले प्रमाण अपने आप में कारण और परिणाम के संबंध को सिद्ध नहीं करते।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

अंततः कहा जा सकता है कि व्याख्यात्मक अनुसंधान में परिकल्पना एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक की भूमिका निभाती है। यह अनुसंधानकर्ता को सामाजिक घटनाओं के संभावित कारणों, परिणामों तथा विभिन्न चरों के बीच संबंधों की जाँच करने में सहायता करती है। इसके माध्यम से अनुसंधान समस्या को स्पष्ट करने, तथ्यों का संकलन करने, आँकड़ों का विश्लेषण करने और प्रमाण-आधारित निष्कर्ष निकालने में सुविधा होती है।

इस प्रकार, परिकल्पना व्याख्यात्मक अनुसंधान को व्यवस्थित, तार्किक और वैज्ञानिक बनाने का एक महत्वपूर्ण साधन है।